INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

भारतीय राष्ट्र-निर्माण एवं प्रशासनिक व्यवस्था के विकास में सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान का राजनीतिक विश्लेषण

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

कर्म क्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध-पत्र स्वतंत्र भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल के भारतीय राष्ट्र-निर्माण और आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था के संस्थागत विकास में ऐतिहासिक योगदान का राजनीति विज्ञान के परिप्रेक्ष्य से विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। 1947 में ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के अवसान के समय भारतीय उपमहाद्वीप 565 से अधिक देशी रियासतों में विभाजित होने के कगार पर था। सरदार पटेल ने यथार्थवादी राजनीतिक दृष्टि, दृढ कूटनीतिक इच्छाशक्ति और साम, दाम, दंड, भेद के राजनीतिक तंत्र का प्रयोग करते हुए इन रियासतों का भारतीय संघ में सफलतापूर्वक एकीकरण सुनिश्चित किया।vbइसके अतिरिक्त, औपनिवेशिक प्रशासनिक संरचना 'इंडियन सिविल सर्विस' (आईसीएस) के स्थान पर 'अखिल भारतीय सेवाओं' (आईएएस, आईपीएस) के पुनर्गठन में पटेल की दूरदर्शी भूमिका का विस्तृत विश्लेषण किया गया है, जिन्हें उन्होंने भारतीय संघ की स्थिरता के लिए "स्टील फ्रेम" माना था। यह अध्ययन यथार्थवाद और संस्थागतवाद के सैद्धांतिक ढाँचे के आलोक में यह सिद्ध करता है कि सरदार पटेल का योगदान केवल क्षेत्रीय एकीकरण तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने भारतीय लोकतंत्र के प्रशासनिक और भौगोलिक आधार-स्तंभ का निर्माण किया।

बीज शब्द: सरदार वल्लभभाई पटेल, राष्ट्र-निर्माण, देशी रियासतों का एकीकरण, अखिल भारतीय सेवाएं, रियरपॉलिटिक, स्टील फ्रेम, भारतीय संघ।

प्रस्तावना (Introduction)

15 अगस्त 1947 को औपनिवेशिक दासता से स्वतंत्र भारत का अभ्युदय केवल एक राजनीतिक सत्ता परिवर्तन की सामान्य घटना नहीं थी, बल्कि यह भयानक सांप्रदायिक हिंसा, अभूतपूर्व जन-विस्थापन, आर्थिक संकट और तीव्र राजनीतिक विखंडन की विकराल चुनौतियों से घिरा एक अत्यंत जटिल ऐतिहासिक कालखंड था। विभाजन की त्रासद विभीषिका के साथ-साथ नव-स्वतंत्र भारतीय राष्ट्र-राज्य के समक्ष अपनी भौगोलिक अखंडता और प्रशासनिक संप्रभुता को अक्षुण्ण बनाए रखने की भीषण चुनौती विद्यमान थी। ब्रिटिश संसद द्वारा पारित **'भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947' (Indian Independence Act, 1947) की धारा 7(1)(b)** के प्रावधानों के अंतर्गत देशी रियासतों पर से ब्रिटिश सम्राट की सर्वोपरिता (Paramountcy) का अंत कर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में स्थित लगभग 565 से अधिक देशी रियासतों को यह विधिक अधिकार प्राप्त हो गया कि वे या तो नवनिर्मित भारत संघ में शामिल हों, नव-सृजित देश पाकिस्तान में शामिल हों, या फिर स्वयं को पूर्णतः

संप्रभु व स्वतंत्र घोषित कर लें। औपनिवेशिक सत्ता का यह अंतिम वैधानिक दांव भारतीय उपमहाद्वीप में 'बालकनाइजेशन' (Balkanization) अर्थात् पूर्ण भौगोलिक, सामाजिक और राजनीतिक विखंडन का गंभीर संकट उत्पन्न कर रहा था। यदि ये सैकड़ों रियासतें स्वतंत्र बनी रहतीं, तो भारत कई छोटे-छोटे प्रतिस्पर्धी राष्ट्रों में बंट जाता और देश निरंतर गृहयुद्ध व अराजकता की चपेट में आ जाता :

A. सरदार पटेल का नेतृत्व और यथार्थवादी राजनीतिक दर्शन

इस अत्यंत नाजुक और निर्णायक ऐतिहासिक संधि-स्थल पर स्वतंत्र भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री, गृह मंत्री तथा रियासती विभाग (States Department) के प्रमुख के रूप में **सरदार वल्लभभाई पटेल** ने राष्ट्र-निर्माण की कमान संभाली। सरदार पटेल का राजनीतिक चिंतन और कार्यशैली कोरे नैतिक आदर्शवाद या अमूर्त सिद्धांतों पर आधारित न होकर कठोर यथार्थवाद (Realpolitik) और व्यावहारिक राजनीति के धरातल पर टिकी थी। वे इस यथार्थ से भली-भांति परिचित थे कि किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र-राज्य की नीव केवल नारों से नहीं, बल्कि उसकी सुदृढ़ संप्रभुता, भौगोलिक निरंतरता और राजनीतिक नियंत्रण पर आधारित होती है। पटेल का राजनीतिक दर्शन मुख्य रूप से तीन मूलभूत तत्वों द्वारा संचालित था:

1. **राष्ट्र-राज्य की क्षेत्रीय अखंडता (Territorial Integrity):** वे स्पष्ट मानते थे कि भारत की भौगोलिक एकता से कोई समझौता नहीं किया जा सकता।
2. **प्रशासनिक निरंतरता एवं संस्थागत स्थायित्व:** औपनिवेशिक काल के अवसान के बाद उपजे प्रशासनिक शून्य को भरने के लिए एक मजबूत, निष्पक्ष और केंद्रीय सिविल सेवा तंत्र का निर्माण।
3. **संवैधानिक संघवाद (Constitutional Federalism):** एक ऐसा मजबूत केंद्रीय ढाँचा तैयार करना जो भारत की सामाजिक विविधता को समेटते हुए देश की संप्रभुता को अक्षुण्ण रख सके।

2. राष्ट्र-निर्माण और राज्य-निर्माण का दोहरा क्षितिज

राजनीति विज्ञान के विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य से, सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान केवल 565 से अधिक देशी रियासतों का भारत संघ में विलय कराने या नक्शे पर सीमाएं खींचने तक सीमित नहीं था। उन्होंने वास्तव में **'राष्ट्र-निर्माण' (Nation-Building)** और **'राज्य-निर्माण' (State-Building)** की दोहरी प्रक्रियाओं का एक साथ संचालन किया:

- **राज्य-निर्माण (State-Building):** इसके अंतर्गत उन्होंने साम, दाम, दंड और भेद के कूटनीतिक व व्यावहारिक उपकरणों का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए देशी रियासतों का प्रशासनिक, विधिक और सुरक्षात्मक एकीकरण सुनिश्चित किया।
- **अखिल भारतीय सेवाओं का पुनर्गठन:** उन्होंने औपनिवेशिक 'इंडियन सिविल सर्विस' (ICS) के स्थान पर 'अखिल भारतीय सेवाओं' (IAS एवं IPS) को **"स्टील फ्रेम ऑफ इंडिया" (Steel Frame of India)** के रूप में पुनर्परिभाषित किया, जो केंद्र और राज्यों के बीच एक मजबूत प्रशासनिक सेतु बना।

इस प्रकार, सरदार पटेल का यह कार्य केवल औपनिवेशिक अवशेषों का उन्मूलन नहीं था, बल्कि स्वतंत्र भारत के लोकतांत्रिक शासन, प्रशासनिक निरंतरता, विधि के शासन और संस्थागत स्थायित्व की वह आधारशिला थी, जिस पर आधुनिक भारतीय गणराज्य आज भी सुदृढ़ता से खड़ा है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Context)

सरदार वल्लभभाई पटेल का राजनीतिक व्यक्तित्व और उनकी कार्यशैली भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के जीवंत अनुभवों से गढ़ी गई थी। पटेल का राजनीतिक जीवन 1917 के खेड़ा सत्याग्रह से राष्ट्रीय पटल पर उभरा। इसके पश्चात 1928 के बारडोली सत्याग्रह का सफल नेतृत्व करके उन्होंने किसानों के अधिकारों के लिए ब्रिटिश हुकूमत को झुकने पर मजबूर किया, जहाँ की महिलाओं ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि प्रदान की। 1930 के दशक में कांग्रेस प्रांतीय चुनावों (1937) के संचालन और संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में पटेल ने अपनी असाधारण सांगठनिक क्षमता और प्रशासनिक अनुशासन का परिचय दिया। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की उस धारा का प्रतिनिधित्व करते थे जो जमीनी धरातल, कृषक समाज और व्यावहारिक राजनीति से गहराई से जुड़ी थी। 1946 में अंतरिम सरकार के गठन के समय पटेल ने गृह, सूचना व प्रसारण तथा रियासती विभाग का कार्यभार संभाला। औपनिवेशिक काल के उत्तरार्द्ध में जब मुस्लिम लीग के पृथकतावादी आंदोलनों और ब्रिटिश सरकार की नीति के कारण विभाजन अपरिहार्य हो गया, तब पटेल ने यह स्पष्ट रूप से समझ लिया था कि विभाजित भारत के भीतर यदि सैकड़ों स्वतंत्र रियासतें बनी रहीं, तो नया राष्ट्र निरंतर गृहयुद्ध और अराजकता की चपेट में रहेगा। यही ऐतिहासिक पृष्ठभूमि थी जिसने पटेल को 'लौह पुरुष' के रूप में भारत के मानचित्र को रेखांकित करने के लिए प्रेरित किया।

शोध पद्धति एवं प्रविधि (Research Methodology)

यह शोध-पत्र गुणात्मक, ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक तथा विषयगत शोध पद्धति पर आधारित है।

- **प्राथमिक स्रोत:** 'सरदार पटेल के पत्राचार' (संपादक: दुर्गा दास), भारत की संविधान सभा की बहसें, 1947 का भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 'इन्स्ट्रूमेन्ट ऑफ एक्सेसिन' (Instrument of Accession) के मूल प्रारूप तथा तत्कालीन सरकारी वक्तव्य व गजट।
- **द्वितीयक स्रोत:** वी. पी. मेनन की प्रामाणिक कृति 'द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स', माइकल ब्रेचर, बी. आर. नंदा, रामचंद्र गुहा तथा अन्य प्रतिष्ठित राजनीति शास्त्रियों व इतिहासकारों के शोध-ग्रंथ एवं अकादमिक शोध-पत्र।

साहित्य की समीक्षा (Review of Literature)

सरदार पटेल के राष्ट्र-निर्माण और प्रशासनिक योगदान पर विभिन्न विद्वानों और विचारकों द्वारा व्यापक लेखन किया गया है:

1. मेनन, वी. पी. (1956) - द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स: रियासती विभाग के सचिव के रूप में मेनन ने पटेल के साथ निकटता से कार्य किया था। उन्होंने पटेल की कूटनीतिक सूझबूझ, निर्णय लेने की त्वरित क्षमता और देशी राजाओं के साथ वार्ताओं का विस्तृत और प्रामाणिक ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया है।
2. दुर्गा दास (संपादक, 1971-74) - सरदार पटल्स कॉरेस्पोंडेंस (10 खंड): यह पत्राचार संग्रह यह सिद्ध करता है कि पटेल केवल एक कठोर प्रशासक नहीं थे, बल्कि वे देश के आंतरिक सुरक्षा, विदेश नीति, आर्थिक ढाँचे और संविधान निर्माण के प्रत्येक पहलू पर सूक्ष्म पकड़ रखते थे।

3. गुहा, आर. (2007) - इंडिया आफ्टर गांधी: रामचंद्र गुहा ने रेखांकित किया है कि यदि पटेल ने रियासतों का एकीकरण न किया होता, तो स्वतंत्र भारत का लोकतंत्र अपनी शैशवावस्था में ही बिखर जाता। गुहा पटेल को बिस्मार्क की तुलना में अधिक जटिल परिस्थितियों में कार्य करने वाला महान राष्ट्र-निर्माता मानते हैं।
4. कांबले, जे. आर. (1982) - सरदार पटेल एंड इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन: इस अध्ययन में संविधान सभा में पटेल की भूमिका और विशेषकर अखिल भारतीय सेवाओं तथा मौलिक अधिकारों से संबंधित परामर्शदात्री समिति के अध्यक्ष के रूप में उनके योगदान का विश्लेषण किया गया है।

शोध-अंतराल (Research Gap)

अधिकांश पूर्ववर्ती साहित्य सरदार पटेल को मुख्य रूप से देशी रियासतों के एकीकरण करने वाले एक 'कुशल प्रशासक' या 'इतिहास के नायक' के रूप में चित्रित करता है। परंतु राजनीति विज्ञान के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य से उनके कार्यों का राज्य-निर्माण (State-Building), संस्थागत स्थायित्व (Institutional Stability), और प्रशासनिक नौकरशाही की स्वतंत्रता के सिद्धांतों के आलोक में संश्लेषित अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। प्रस्तुत शोध यह विश्लेषण करता है कि कैसे पटेल के निर्णयों ने आधुनिक भारतीय राज्य की संरचनात्मक अखंडता को आधार प्रदान किया।

शोध का महत्त्व एवं आवश्यकता (Significance and Need of the Study)

- राजनीतिक-सैद्धांतिक महत्त्व: यह शोध-पत्र यह समझने के लिए एक मजबूत सैद्धांतिक ढाँचा प्रदान करता है कि नव-स्वतंत्र, बहु-सांस्कृतिक और विषमतापूर्ण समाजों में राष्ट्र-निर्माण और राज्य-निर्माण की प्रक्रियाएं किस प्रकार संचालित होती हैं।
- प्रशासनिक दृष्टिकोण: औपनिवेशिक नौकरशाही को एक लोकतांत्रिक देश की विकासवादी व्यवस्था में रूपांतरित करने के पटेल के मॉडल का अध्ययन समकालीन लोक प्रशासन के विद्वानों के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।
- राष्ट्रीय अखंडता को समझने हेतु: दक्षिण एशियाई क्षेत्र में राज्य की स्थिरता और केंद्र-राज्य संबंधों के ऐतिहासिक धरातल को समझने के लिए पटेल के एकीकरण मॉडल की समीक्षा आवश्यक है।

शोध समस्या (Statement of the Research Problem)

1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ, तब दो सबसे बड़े प्रश्न थे: पहला, क्या सैकड़ों रियासतों में विभाजित भारतीय भू-भाग को एक संप्रभु संघ में एकीकृत किया जा सकता है? और दूसरा, क्या औपनिवेशिक शासन के उपकरण रही 'इंडियन सिविल सर्विस' (आईसीएस) को समाप्त कर दिया जाए या उसे लोकतांत्रिक भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्गठित किया जाए? राजनीति विज्ञान में यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक है कि सरदार पटेल की यथार्थवादी रणनीतियों ने किस प्रकार इन दोनों विकराल समस्याओं का समाधान करके एक अखंड और स्थिर भारतीय राज्य की नींव रखी।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. देशी रियासतों के भारतीय संघ में एकीकरण की प्रक्रिया में सरदार पटेल द्वारा प्रयुक्त राजनीतिक व कूटनीतिक रणनीतियों का विश्लेषण करना।
2. जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर के विलय के संदर्भ में पटेल की संकट-प्रबंधन क्षमता और कूटनीतिक सूझबूझ का परीक्षण करना।
3. स्वतंत्र भारत में अखिल भारतीय सेवाओं (आईएएस, आईपीएस) की स्थापना और उनके संवैधानिक संरक्षण में पटेल की भूमिका का अध्ययन करना।
4. संविधान सभा में मौलिक अधिकार समिति और अल्पसंख्यक समिति के अध्यक्ष के रूप में पटेल के विचारों का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न (Research Questions)

1. देशी रियासतों के भारतीय संघ में विलय हेतु सरदार पटेल ने किन मुख्य राजनीतिक और कूटनीतिक उपकरणों का प्रयोग किया?
2. जूनागढ़ और हैदराबाद के भारत में विलय के दौरान पटेल का राजनीतिक व सैन्य निर्णय किस प्रकार यथार्थवादी राजनीति का उत्कृष्ट उदाहरण था?
3. सरदार पटेल ने औपनिवेशिक प्रशासनिक व्यवस्था का विरोध करने के बजाय अखिल भारतीय सेवाओं को "स्टील फ्रेम" के रूप में पुनर्गठित करने का समर्थन क्यों किया?

सैद्धांतिक आधार (Theoretical Framework)

यह अध्ययन राजनीति विज्ञान के दो प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है:

1. यथार्थवाद का सिद्धांत: हंस मॉर्गनथॉ और कौटिल्य के यथार्थवादी दर्शन के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय और आंतरिक राजनीति में राष्ट्र-हित तथा शक्ति का संतुलन ही सर्वोपरि होता है। पटेल का दृष्टिकोण इसी यथार्थवाद से संचालित था, जहाँ उन्होंने नैतिक आदर्शवाद के स्थान पर व्यावहारिक शक्ति और कूटनीति को प्राथमिकता दी।
2. संस्थागतवाद: यह सिद्धांत मानता है कि राज्य का स्थायित्व उसकी मजबूत और निष्पक्ष संस्थाओं पर निर्भर करता है। पटेल द्वारा अखिल भारतीय सेवाओं और संवैधानिक संस्थाओं की स्थापना इसी संस्थागत विकास का प्रतीक है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएँ (Scope and Limitations)

- **क्षेत्र:** यह अध्ययन 1947 से 1950 (पटेल के निधन तक) के मध्य भारतीय संघ के राजनीतिक एकीकरण, प्रशासनिक ढाँचे के निर्माण और संविधान सभा में उनकी भूमिका के विश्लेषण तक सीमित है।
- **सीमाएँ:** यह शोध-पत्र मुख्य रूप से पटेल के राजनीतिक, प्रशासनिक व संवैधानिक योगदान के विश्लेषण पर केंद्रित है; इसमें उनके शुरुआती व्यक्तिगत जीवन या स्वतंत्रता पूर्व के आंदोलनों के विस्तृत विवरण को शामिल नहीं किया गया है।

विषयगत विवेचन एवं गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन

(Thematic Discussion & Deep Analytical Study)

1. देशी रियासतों का एकीकरण: कूटनीति, प्रलोभन और लौह रणनीति - रियासती विभाग के प्रभार के साथ ही सरदार पटेल ने वी. पी. मेनन के साथ मिलकर एकीकरण का मास्टर प्लान तैयार किया। उन्होंने रियासतों के शासकों के समक्ष 5 जुलाई 1947 को एक ऐतिहासिक अपील की, जिसमें उन्होंने देश भक्ति और साझा इतिहास का आह्वान करते हुए कहा कि भारत संघ में विलय ही दोनों पक्षों के हित में है :

- इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेसिन (Instrument of Accession): पटेल ने एक व्यावहारिक रास्ता निकाला। उन्होंने राजाओं से शुरुआत में केवल तीन विषयों–विदेश मामले, रक्षा, और संचार–पर भारत संघ में विलय के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने को कहा।
- प्रिवी पर्स (Privy Purse) की नीति: देशी राजाओं के सामाजिक-आर्थिक हितों की रक्षा हेतु और उन्हें स्वेच्छा से अधिकार त्यागने के लिए राजी करने हेतु पटेल ने 'प्रिवी पर्स' (राजभत्ता) और कतिपय विशेषाधिकार देने की संवैधानिक प्रतिबद्धता जताई। यह कदम पटेल की दूरगामी कूटनीतिक सूझबूझ का परिचायक था, जिससे बिना किसी बड़े रक्तपात के अधिकांश रियासतें 15 अगस्त 1947 से पूर्व ही भारत संघ में शामिल हो गईं।

2. जटिल रियासती संकटों का समाधान: जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर - जिन्ना द्वारा 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' के तहत देशी रियासतों को उकसाने और भारत को आंतरिक रूप से खंडित करने के प्रयासों का पटेल ने कठोरता से मुकाबला किया:

क्र. सं.	रियासत	उत्पन्न संकट	पटेल की राजनीतिक व कूटनीतिक कार्रवाई	परिणति
1.	जूनागढ़	मुस्लिम नवाब ने पाकिस्तान में विलय की घोषणा की, जबकि 80% से अधिक जनता हिंदू थी और रियासत भौगोलिक रूप से भारत से घिरी थी।	पटेल ने आर्थिक नाकेबंदी की, जन-विद्रोह (आरज़ी हुकूमत) को समर्थन दिया और नवाब के कराची भाग जाने के बाद सेना भेजी। तत्पश्चात जनमत संग्रह कराया गया।	99% से अधिक जनता ने भारत के पक्ष में मतदान किया। फरवरी 1948 में पूर्ण विलय।
2.	हैदराबाद	निजाम उस्मान अली खान ने स्वतंत्र रहने की घोषणा की, 'रजाकार' नामक उग्रवादी संगठन द्वारा जनता पर अत्याचार किया गया और पाकिस्तान से हथियार मंगाने का प्रयास किया।	पटेल ने बिना किसी हिचकिचाहट के 13 सितंबर 1948 को 'ऑपरेशन पोलो' (पुलिस कार्रवाई) का आदेश दिया।	5 दिनों के भीतर निजाम की सेना और रजाकारों ने आत्मसमर्पण किया। हैदराबाद का भारत में विलय हुआ।
3.	कश्मीर	राजा हरि सिंह द्वारा अनिर्णय की स्थिति। अक्टूबर 1947 में	हरि सिंह द्वारा विलय पत्र पर हस्ताक्षर के तुरंत बाद पटेल के	कश्मीर का भारत में वैधानिक विलय

		कबाली/पाकिस्तानी हमला।	निर्देश पर भारतीय वायुसेना ने श्रीनगर में सेना उतारी और घुसपैठियों को खदेड़ा।	सुनिश्चित हुआ।

3. प्रशासनिक व्यवस्था का पुनर्गठन: स्टील फ्रेम के रूप में ऑल इंडिया सर्विसेज - स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता औपनिवेशिक काल की 'इंडियन सिविल सर्विस' (आईसीएस) को समाप्त करने के पक्ष में थे, क्योंकि इसे ब्रिटिश दमन का उपकरण माना जाता था। परंतु, सरदार पटेल की प्रशासनिक दूरदर्शिता भिन्न थी :

- ऑल इंडिया सर्विसेज (आईएएस और आईपीएस) का गठन: 21 अप्रैल 1947 को दिल्ली के मेटकाफ हाउस में सिविल सेवा के प्रोबेशनर्स को संबोधित करते हुए पटेल ने उन्हें "स्टील फ्रेम ऑफ इंडिया" (भारत का इस्पाती ढाँचा) की संज्ञा दी। उन्होंने 'भारतीय प्रशासनिक सेवा' (आईएएस) और 'भारतीय पुलिस सेवा' (आईपीएस) का पुनर्गठन किया।
- संविधान सभा में सिविल सेवाओं का बचाव: 10 अक्टूबर 1949 को संविधान सभा में पटेल ने सिविल सेवकों के लिए संवैधानिक संरक्षण (जो बाद में संविधान के अनुच्छेद 311 और अनुच्छेद 312 के रूप में शामिल हुआ) की पुरजोर वकालत की। उन्होंने स्पष्ट कहा कि यदि प्रशासकों को राजनीतिक दबावों और भय से मुक्त होकर अपनी बात कहने की स्वतंत्रता नहीं दी गई, तो एक एकीकृत भारत का चलना असंभव हो जाएगा।

4. संविधान निर्माण और मौलिक अधिकारों की सुरक्षा में भूमिका - सरदार पटेल केवल एक प्रशासक ही नहीं थे, बल्कि संविधान सभा के एक अत्यंत प्रभावशाली स्तंभ थे:

- वे मौलिक अधिकार, अल्पसंख्यक और जनजातीय व बहिष्कृत क्षेत्र परामर्शदात्री समिति के अध्यक्ष थे।
- उन्होंने अल्पसंख्यकों के धार्मिक और सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा का समर्थन किया, किंतु धर्म के आधार पर पृथक निर्वाचक मंडल की मांग को दृढ़ता से खारिज कर दिया, क्योंकि वे जानते थे कि पृथक निर्वाचक मंडल ही विभाजन का मुख्य कारण बना था।
- पटेल ने संपत्ति के अधिकार, राज्य के नीति निदेशक तत्वों तथा आपातकालीन प्रावधानों के संवैधानिक स्वरूप को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता (Relevance in Modern Context)

राजनीति विज्ञान के अध्येताओं के लिए सरदार पटेल के विचार और कार्य आधुनिक युग में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं:

1. राष्ट्रीय सुरक्षा एवं आंतरिक अखंडता: आज जब भारत उग्रवाद, अलगाववाद और सीमा पार आतंकवाद जैसी आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा है, पटेल का कठोर यथार्थवादी दृष्टिकोण राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा नीतियों का मार्गदर्शन करता है।
2. प्रशासनिक तटस्थता एवं सुशासन: राजनीतिक दबावों के सामने नौकरशाही की निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता बनाए रखने का पटेल का संदेश वर्तमान प्रशासनिक सुधारों के लिए एक मानक ढाँचा प्रदान करता है।

3. सहकारी संघवाद: पटेल ने 565 रियासतों को मिलाकर जिस संघ का निर्माण किया, वह केंद्र और राज्यों के बीच संवाद और सहयोग का प्रतीक था। वर्तमान भारतीय राजनीति में मजबूत केंद्र और स्वायत्त राज्यों के संतुलन की नींव पटेल के एकीकरण मॉडल में ही निहित है।
4. विदेश नीति में यथार्थवाद: 7 नवंबर 1950 को सरदार पटेल ने पंडित जवाहरलाल नेहरू को एक ऐतिहासिक पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने तिब्बत पर चीन के कब्जे और भारत की उत्तर-पूर्वी सीमाओं पर संभावित चीनी खतरे के प्रति आगाह किया था। यह पत्र पटेल के विदेश नीति संबंधी यथार्थवाद और दूरदर्शिता का सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक दस्तावेज माना जाता है।

सुझाव एवं नीतिगत निहितार्थ (Suggestions and Policy Implications)

- प्रशासनिक सुधारों की आवश्यकता: पटेल द्वारा परिकल्पित 'स्टील फ्रेम' को आज की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक पारदर्शी, जनता के प्रति जवाबदेह और लालफीताशाही से मुक्त बनाने हेतु निरंतर सुधारों की आवश्यकता है।
- राष्ट्रीय एकीकरण की चेतना का प्रसार: भारत की बहु-सांस्कृतिक और बहु-भाषी संरचना में राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुदृढ़ करने के लिए पटेल के राजनीतिक दर्शन और एकीकरण के इतिहास को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में व्यापक स्थान दिया जाना चाहिए।
- आंतरिक सुरक्षा तंत्र का आधुनिकीकरण: पटेल द्वारा स्थापित पुलिस प्रशासन (आईपीएस) को आधुनिक तकनीकों, साइबर सुरक्षा और नागरिक-अनुकूल कार्यशैली से लैस किया जाना चाहिए ताकि वे नई चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना कर सकें।

निष्कर्ष (Conclusion)

शोध परिकल्पनाओं (Hypotheses) का प्रामाणीकरण:

- **परिकल्पना 1:** "सरदार वल्लभभाई पटेल का देशी रियासतों के एकीकरण का मॉडल केवल भावनात्मक अपील पर आधारित न होकर यथार्थवादी कूटनीति, रणनीतिक दबाव और 'दाम, दंड, भेद' के राजनीतिक सिद्धांतों का एक सफल अनुप्रयोग था।"
    - प्रामाणीकरण: ऐतिहासिक साक्ष्यों, रियासती विभाग के दस्तावेजों तथा जूनागढ़ में जनमत संग्रह, हैदराबाद में 'ऑपरेशन पोलो' (सैन्य बल) और प्रिवी पर्स के कूटनीतिक उपयोग का विश्लेषण यह पूरी तरह सिद्ध करता है कि पटेल ने आदर्शवाद के स्थान पर व्यावहारिक शक्ति और कूटनीति का प्रयोग किया। उन्होंने साम, दाम, दंड और भेद के सभी साधनों का कुशलतापूर्वक प्रयोग करके भारत को अखंड बनाया। अतः परिकल्पना 1 पूर्णतः सिद्ध एवं प्रमाणित होती है।
- **परिकल्पना 2:** "ब्रिटिश कालीन औपनिवेशिक नौकरशाही (आईसीएस) को समाप्त करने के बजाय अखिल भारतीय सेवाओं (आईएएस/आईपीएस) के रूप में पुनर्गठित करना तथा उन्हें संवैधानिक सुरक्षा कवच प्रदान करना स्वतंत्र भारत के संस्थागत स्थायित्व और राष्ट्रीय अखंडता का मुख्य आधार सिद्ध हुआ।"

- प्रामाणीकरण: संविधान सभा की बहसों और स्वतंत्रता-उत्तर भारत के प्रशासनिक इतिहास के अध्ययन से यह प्रमाणित होता है कि यदि पटेल ने अखिल भारतीय सेवाओं की वकालत न की होती और उन्हें अनुच्छेद 311 व 312 का संवैधानिक संरक्षण न दिया होता, तो नव-स्वतंत्र भारत के पास देश को एक सूत्र में पिरोने और आपातकालीन स्थितियों को संभालने के लिए कोई प्रशिक्षित व निष्पक्ष प्रशासनिक ढाँचा नहीं होता। अतः परिकल्पना 2 भी पूर्णतः सिद्ध एवं प्रमाणित होती है।

भारतीय राष्ट्र-निर्माण और प्रशासनिक व्यवस्था के विकास में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान अतुलनीय और ऐतिहासिक है। पटेल का राजनीतिक दर्शन आधुनिक भारत के निर्माण का वह ठोस धरातल था, जिस पर आज का भारतीय लोकतंत्र खड़ा है। यदि पंडित जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के आदर्शवादी और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रतीक थे, तो सरदार पटेल उस राज्य की भौतिक, भौगोलिक और प्रशासनिक संरचना के वास्तविक वास्तुकार थे। उन्होंने 565 से अधिक बिखरी हुई रियासतों को एक झंडे के नीचे लाकर आधुनिक भारत के राजनीतिक मानचित्र को उकेरा और औपनिवेशिक प्रशासनिक तंत्र को 'अखिल भारतीय सेवाओं' के रूप में ढालकर देश को एक अटूट 'स्टील फ्रेम' प्रदान किया। उनका यथार्थवादी कूटनीतिक दृष्टिकोण, राष्ट्रीय अखंडता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता और दूरदर्शी प्रशासनिक सोच आधुनिक भारत की राजनीति और लोक प्रशासन के लिए सर्वदा एक मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ बनी रहेगी। सरदार वल्लभभाई पटेल का जीवन और कार्य यह प्रमाणित करता है कि महान राष्ट्रों का निर्माण केवल नारों और आदर्शों से नहीं, बल्कि दृढ इच्छाशक्ति, प्रशासनिक क्षमता और यथार्थवादी राजनीति के सुदृढ़ धरातल पर होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

- कांबले, जे. आर. (1982). सरदार पटेल एंड इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन. विकास पब्लिशिंग हाउस।
- गुहा, आर. (2007). इंडिया आफ्टर गांधी: द हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड्स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी. मैकमिलन।
- गोपाल, एस. (1975). जवाहरलाल नेहरू: ए बायोग्राफी (खंड 2). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- चौपड़ा, पी. एन. (संपादक). (1991). द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ सरदार वल्लभभाई पटेल. कोनेक पब्लिकेशंस।
- दास, डी. (संपादक). (1971-74). सरदार पटल्स कॉरेस्पोंडेंस 1945-50 (10 खंड). नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।
- नंदा, बी. आर. (1990). इन गांधीज फुटस्टेप्स: द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ जमनालाल बजाज. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पटेल, वी. (1949). कॉन्स्टिट्यूएंट असेंबली डिबेट्स (संविधान सभा की बहसें, खंड IX एवं X). भारत सरकार लोक सभा सचिवालय।
- ब्रेचर, एम. (1959). नेहरू: ए पॉलिटिकल बायोग्राफी. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मेनन, वी. पी. (1956). द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स. ओरिएंट लॉन्गमैन।
- मेनन, वी. पी. (1957). द ट्रांसफर ऑफ पावर इन इंडिया. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मुखर्जी, ए. (2000). इंपीरियल हयूब्रिस: द ब्रेकअप ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर. रोउटलेज।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA



Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM